

# International Multidisciplinary Research Journal

## *Golden Research Thoughts*

Chief Editor  
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher  
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor  
Dr.Rajani Dalvi

Honorary  
Mr.Ashok Yakkaldevi

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

### Regional Editor

Dr. T. Manichander

### International Advisory Board

Kamani Perera  
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Mohammad Hailat  
Dept. of Mathematical Sciences,  
University of South Carolina Aiken

Hasan Baktir  
English Language and Literature  
Department, Kayseri

Janaki Sinnasamy  
Librarian, University of Malaya

Abdullah Sabbagh  
Engineering Studies, Sydney

Ghayoor Abbas Chotana  
Dept of Chemistry, Lahore University of  
Management Sciences[PK]

Romona Mihaila  
Spiru Haret University, Romania

Ecaterina Patrascu  
Spiru Haret University, Bucharest

Anna Maria Constantinovici  
AL. I. Cuza University, Romania

Delia Serbescu  
Spiru Haret University, Bucharest,  
Romania

Loredana Bosca  
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pinteau,  
Spiru Haret University, Romania

Anurag Misra  
DBS College, Kanpur

Fabricio Moraes de Almeida  
Federal University of Rondonia, Brazil

Xiaohua Yang  
PhD, USA

Titus PopPhD, Partium Christian  
University, Oradea, Romania

George - Calin SERITAN  
Faculty of Philosophy and Socio-Political  
Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

.....More

### Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade  
ASP College Devrukh, Ratnagiri, MS India Ex - VC. Solapur University, Solapur

Iresh Swami  
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Rajendra Shendge  
Director, B.C.U.D. Solapur University,  
Solapur

R. R. Patil  
Head Geology Department Solapur  
University, Solapur

N.S. Dhaygude  
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

R. R. Yalikal  
Director Management Institute, Solapur

Rama Bhosale  
Prin. and Jt. Director Higher Education,  
Panvel

Narendra Kadu  
Jt. Director Higher Education, Pune

Umesh Rajderkar  
Head Humanities & Social Science  
YCMOU, Nashik

Salve R. N.  
Department of Sociology, Shivaji  
University, Kolhapur

K. M. Bhandarkar  
Praful Patel College of Education, Gondia

S. R. Pandya  
Head Education Dept. Mumbai University,  
Mumbai

Govind P. Shinde  
Bharati Vidyapeeth School of Distance  
Education Center, Navi Mumbai

G. P. Patankar  
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Alka Darshan Shrivastava  
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Chakane Sanjay Dnyaneshwar  
Arts, Science & Commerce College,  
Indapur, Pune

Maj. S. Bakhtiar Choudhary  
Director, Hyderabad AP India.

Rahul Shriram Sudke  
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

Awadhesh Kumar Shirotriya  
Secretary, Play India Play, Meerut (U.P.)

S. Parvathi Devi  
Ph.D.-University of Allahabad

S.KANNAN  
Annamalai University, TN

Sonal Singh,  
Vikram University, Ujjain

Satish Kumar Kalhotra  
Maulana Azad National Urdu University



## विज्ञान बाल कहानियाँ

ममता गोखे , डॉ. स्नेहलता श्रीवास्तव

'शोधार्थी , इन्दौर.

'निर्देशिका , इन्दौर.

### सारांश :

शताब्दियों से मानव के महत्वपूर्ण अनुभवों को लोग कहानियों के रूप में सुनाते रहें हैं। ये कहानियाँ बच्चे विशेष रुचि से सुनते रहे हैं। उन्हीं की स्मरण शक्ति के परिणाम स्वरूप कहानियाँ हजारों मील की यात्रा करके संसार के एक कोने से दूसरे कोने में पहुँचती हैं।

### प्रस्तावना :

ये कहानियाँ जब बच्चे सुनते हैं तो उनके मस्तिष्क में उस घटना विशेष का एक काल्पनिक चित्र बनता चलता है। इसके अलावा उससे सम्बन्धित अन्य कोई देखी या अनुभूत बात भी उनके मस्तिष्क में अनजाने ही चलती रहती है। इस तरह बच्चे कहानी सुनते समय अनेक नए-नए सपनों में खोए रहते हैं जो उनकी अपनी दुनिया की सीमा में होते हैं ऐसी स्थिति में जहाँ तक संभव हो, बच्चों के मन में उस समय उठने वाली हर संभव शंका का उचित और विस्तृत समाधान प्रस्तुत करना चाहिए क्योंकि कहानियों में घटनाओं और परिस्थितियों का विशेष महत्व होता है। ये घटनाएँ बच्चों की कल्पना और उनकी भावनाओं को उत्तेजित करती हैं।

बच्चों का मनोरंजन करने और उन्हें कल्पनालोक की सैर कराने में परीकथाओं की भी बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आरंभिक युग में जब मनुष्य प्रकृति के रहस्यों को नहीं समझ पाया था तभी उसने ऐसे अलौकिक प्राणियों की कल्पना की थी। जिन्हें 'परी' कहा गया। भयानक वर्षा, बाढ़, आँधी, तूफान आदि के कारणों को न समझकर वह इन्हें परियों जैसी अलौकिक शक्तियों का ही प्रभाव मानता था। लेकिन अब बच्चे परीलोक से आगे निकल कर विज्ञान लोक की उन कल्पनाओं में रुचि लेने लगे हैं जो अनेक महत्वपूर्ण आविष्कारों का कारण बनी हैं। अब युग बदल गया है। जीवन के साथ कहानी के मानदंड और मूल्य बदल गए हैं। अब पुरानी कहानियों में बच्चों को उतना मजा नहीं आता और उनसे उनकी जिज्ञासा भी शांत नहीं होती। बच्चों की जिज्ञासा और रुचि को विज्ञान बाल कहानियों ने ओर बढ़ा दिया है।

विज्ञान बाल कहानियों की रचना वैज्ञानिक तथ्यों से परिचित कराने के उद्देश्य से की जाती है। कहानियों में विज्ञान को जड़ तथ्यों के रूप में नहीं सजीव रूप में स्वीकार किया जाता है। बालकों की रुचि कहानियाँ पढ़ने में होती है। इसके अतिरिक्त विशुद्ध ज्ञान चाहे भूगोल, इतिहास, पुराण या विज्ञान किसी का भी हो उसकी जानकारी प्राप्त करने में उन्हें बौद्धिक कसरत करनी पड़ती है, मानसिक श्रम करना पड़ता है। विज्ञान बाल कहानियों के द्वारा बच्चों की वैज्ञानिक रुचि तो विकसित होती है साथ ही उनकी वैज्ञानिक कल्पना को भी बल मिलता है। जिससे बच्चें भूत-प्रेत अंधविश्वास, तंत्र-मंत्र जादू टोने की दुनिया से निकलकर एक वज्ञान परक सोच ग्रहण करते हैं। जिससे उनकी तर्कशक्ति बलवती होती है।

विज्ञान बाल कहानियों के द्वारा बच्चों को प्राकृतिक घटनाओं के पीछे छिपे कारणों का पता चलता है जिससे उनकी जिज्ञासा भी शान्त होती है। ये विज्ञान कथाएँ बच्चों को जादू-टोनों के पीछे छिपे वैज्ञानिक कारणों को उजागर करने के साथ उन्हें विज्ञान जगत के ओर निकट ले जाती हैं। इससे बच्चों की रुचि विज्ञान के प्रति बढ़ने लगती है और वे हर घटना के सत्य व कारण को जानने के लिए उत्सुक हो जाते हैं जबकि विज्ञान बाल कहानियों का उद्देश्य यही है कि

वह बच्चों को विज्ञान की जानकारी देने के साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना है।

विज्ञान कथा लेखक आइजक आसिमोव ने अपनी पुस्तक “आसिमोव आन साइंस फिक्शन” में विज्ञान कथा की परिभाषा देते हुए कहा कि—“साहित्य की वह विधा है जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी में संभावित परिवर्तनों के प्रतिमानवीय प्रतिक्रिया को अभिव्यक्ति देती है।”<sup>1</sup> अतः विज्ञान बाल कथाएँ सत्य पर आधारित रहती हैं और अपने छोटे से शीर्षक में ही इतनी पूर्ण रहती हैं कि नेत्रों के सम्मुख उस घटना विशेष, चरित्र अथवा जीवन पक्ष का चित्र खींचने के साथ-साथ बच्चों का मनोरंजन व ज्ञानवर्धन भी करती हैं।

कहानी बाल-साहित्य की न केवल प्रमुख विधा है वरन् अत्यंत लोकप्रिय विधा है। इन कहानियों का सम्बन्ध बालकों के अपने जीवन से है। साथ ही बालकों के चारों ओर जो घटित हो रहा है और अपने दैनिक जीवन में बालक जिन वस्तुओं से सम्पर्क में आता है।

अथवा जिन विज्ञान के उपकरणों का प्रयोग करता है, उन्हें आधार बनाकर विज्ञान बाल कहानियाँ लिखी जाती हैं। वैज्ञानिक कहानी लिखने के लिए विज्ञान का स्पष्ट ज्ञान अनिवार्य है। इस ज्ञान को स्वयं आत्मसात् करके कहानी का रूप देने की क्षमता भी कहानीकार में होना चाहिए। यह अत्यंत कठिन है, लेकिन आज के साहित्य प्रणेताओं ने बच्चों को आधुनिकता से जोड़ने वैज्ञानिक प्रगति और उपलब्धियों का परिचय देने उनकी जिज्ञासाओं को परितृप्त करने, उनके मन में नई सोच विकसित करने व जानने के प्रति ललक एवं अभिरुचि जाग्रत करने, प्रकृति के रहस्यों के बंद द्वार खोलने हेतु सहज, मनोरंजक और रोचक भाषा शैली में उल्लेखनीय बाल विज्ञान साहित्य की सृष्टि की है। रचनाकारों ने बड़े दुरुह और नीरस वैज्ञानिक विषयों और प्रयोगों को अति आकर्षण बालोचित शैली में प्रस्तुत कर बच्चों को एक नया ज्ञान लोक दिया, जो उनकी कल्पना शक्ति का विस्तार करता है।

1900 ई. में सर्वप्रथम विज्ञान कथा बाबू केशव प्रसाद सिंह की “चंद्रलोक की यात्रा” है लेकिन उस समय साहित्यिक समाज में इसे पर्याप्त प्रोत्साहन नहीं प्राप्त हो सका। परन्तु 1925 में सुंदरी मनोरमा की करुण कथा लिखी गई जो बच्चों की पहली विज्ञान कथा थी। 1930 में जगपति चतुर्वेदी ने आग की कहानी लिखी। 1930-40 के दशक में डॉ. सत्य प्रकाश ने सृष्टि की कथा लिखी। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद विज्ञान की प्रगति और औद्योगिक क्रांति ने जब देश का वातावरण बदला नए-नए सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना हुई, पुराने मूल्यों और रूढ़ियों से बाहर निकलने की छटपटाहट बढ़ी तब बच्चों के प्रति लोग चिंतित हुए। विज्ञान लेखकों ने विज्ञान बाल कथाओं पर अपनी लेखनी चलाई। 1958 में जय प्रकाश भारती की पुस्तक ‘रेल की कहानी’ नाम से सर्वोदय प्रकाशन’ दिल्ली से प्रकाशित हुई। जिसमें उन्होंने जेम्सवाट की चाय की केतली से निकलने वाली भाप को लेकर पटरी पर भाप के इंजन की सहायता से दौड़ने वाली रेलों के विकास की कहानी बच्चों के लिए इतने सरल एवं रोचक ढंग से लिखी है। वह आज भी बाल जगत में लोकप्रिय है।

वैज्ञानिक बाल कथाओं के आरंभिक दिनों में मंयकजी ने ‘भूत से भिड़त’ लंबी कहानी लिखी जो ‘बाल सखा’ के नवम्बर दिसम्बर 1965 के दो अंकों में प्रकाशित हुई। डॉ. गोरखा प्रसाद, राजेश दीक्षित, कुवंर सुरेश सिंह, हरिकृष्ण देवसरे, जय प्रकाश भारती और शुकदेव दुबे ने वैज्ञानिक लेखन की शुरुवात की। जय प्रकाश भारती की विज्ञान की विभूतियाँ तथा देवसरे की ‘नए परीलोक’ में इसका उदाहरण है। मनोहर वर्मा की ‘यह मैं हूँ’, मोहम्मद साजिद खान की ‘नजरो से दूर’ शंकुतला वर्मा की ‘प्लैनेट एक्स’ संजीव जायसवाल संजय की ‘मानव फैक्स मशीन’, हरदर्शन सहगल की ‘तोते का आई-क्यू’, राधे लाल नवचक्र की ‘छोटा-सा प्रयोग’ तथा रमाशंकर की ‘अगर सच होता’ विज्ञान बाल कहानियाँ हैं जो प्रारंभिक दिनों में लिखी गई थी।<sup>1</sup>

वैज्ञानिक बाल कथाओं में वैज्ञानिक यथार्थ की अपेक्षा कल्पना या फैंटेसी तत्व अधिक हावी रहता है। डॉ. देवसरे के शब्दों में कहे तो इसमें बहुत से लोग विज्ञान को प्लेटफार्म बनाकर कल्पना के सहारे दूसरे लोकों में पहुँच जाते हैं। देवसरे जी की हाल ही में प्रकाशित पुस्तक ‘घना जंगल कॉम बारह अध्यायों में बटी है। जिसका हर भाग कहानी की भांति अलग है। इन कहानियों में कम्प्यूटर युग की कथा है। जो बड़े रोचक ढंग से बच्चों को कम्प्यूटर और सूचना क्रांति के बारे में जानकारी देती है। यहाँ पशु-पक्षियों के हाथों में कैलकुलेटर और मोबाइल है साथ ही जंगल में कम्प्यूटर सेंटर भी है। जो आधुनिक समय व विज्ञान की प्रगति की प्रतीक है।<sup>1</sup>

डॉ. शकुतला कालरा के कथा संकलन ‘चमत्कार का रहस्य’ में संग्रहित चारों कहानियाँ ‘चमत्कार का रहस्य’, ‘नन्हीं पूजा बड़ा फैसला’, ‘शोर का दैत्य’ और ‘आग का खेल’ वैज्ञानिक दृष्टिकोण के द्वारा विभिन्न अंधविश्वासों की पोल खोलती प्रतीत होती है।<sup>1</sup>

विज्ञान के चमत्कार बच्चों से लेकर किशोरों की पहली पसंद बनते जा रहे हैं। आज कम्प्यूटर और इंटरनेट से दुनिया सिमट कर, नजदीक आ गई है। संजीव जायसवाल ‘संजय’ की ‘लाइव टेलीकास्ट’ कहानी टी.वी. की दुनिया को नई दिशा देने की कहानी है जिसके द्वारा चोर पकड़ लिए जाते हैं। डॉ. रोहिताश्वर की ‘विज्ञान परी’ विज्ञान की भविष्य में होने वाली संभावनाओं पर आधारित है रामवचन सिंह आनंद की कहानी ‘गणेशजी ने दूध पिया’ में अंधविश्वासों के विरुद्ध वैज्ञानिक चिन्तन को दर्शाती है।<sup>1</sup>

बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास आज के समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। जाकिर अली ‘रजनीश’ ने सर्वथा मौलिक अंदाज में ऐसी कई कहानियों का सृजन किया है। जो ऐसी ही दृष्टि पर केन्द्रित है। लेकिन ऐसी कहानियों का सृजन जटिल होता है क्योंकि विषय की गंभीरता के मध्य रोचकता का दब जाने का डर बना रहता है

जाकिर अली 'रजनीश' ने ऐसी कहानियों में गंभीरता को बचाते हुए रोचकता को बनाए रखा है तथा बाल संवेदना को खोने नहीं दिया है। यहीं विशेषताएँ उन्हें अपने समकालीन रचनाकारों में विशिष्ट बनाती है। 'रूबी का रोबोट' में जाकिर अली 'रजनीश' के रूबी का चित्रण एक नटखट शरारती बालिका के रूप में किया है। उसके लंदन से आने वाले अंकल ने उसे एक रोबोट दिया था। जिससे वह वार्तालाप करना चाहती है। अपने दुख-सुख बाँटना चाहती है किन्तु रोबोट हर प्रश्न का उत्तर 'मेरा नाम रोबो है' कहकर ही देता है। मशीन की सीमा और बालपन की संवेदना का ऐसा सुन्दर चित्रण प्रभावकारी है। 'क्लोन का भूत' में जाकिर अली 'रजनीश' ने जहाँ विज्ञान के संभावित दुष्प्रयोग के खतरे से सावधान किया है वही रवि के पापा द्वारा निर्मित रवि का क्लोन उसके लिये बड़ी मुसीबत बन जाता है। क्लोन का निर्माण लुप्त होती संतति को बचाने की बजाए मानव निर्माण करेगा तो ऐसे संकट संभव हो सकते हैं। 'क्लोन का भूत' में इसी बात को बखूबी समझाया गया है।<sup>5</sup>

जय प्रकाश भारती जी ने अत्याधुनिक विज्ञान की उपलब्धियों से बच्चों को सुपरिचित कराने वाली कहानियाँ लिखी है। वैज्ञानिक दृष्टि से उनकी कहानी 'चांद लोक की सैर' बहुत प्रसिद्ध हुई। चन्द्रमा की सतह पर कदम रखने वाले इंसान के साक्षात्कार पर आधारित इस कहानी में लेखक की उस दृष्टि का परिचय मिलता है जिसके रहते वह भी बाल मनोविज्ञान के समिश्रण से किस्से कहानी कहते हुए बच्चों के साथ खिलन्दरा करते हैं।<sup>6</sup>

बालमन के कुशल चित्तरे रमाशंकर जी ने बच्चों को विविध विषयों की अनेक कहानियाँ दी है। जिसमें सामाजिक, ऐतिहासिक और वैज्ञानिक कहानियाँ प्रमुख हैं। देश रक्षा, नंदा की समझदारी जैसी और अन्य कहानियाँ वृक्ष मित्र, सुख्यु और भालू नैमी और राजा-रानी, अन्तरिक्ष का स्वप्निल लोक आदि प्रमुख कहानी संग्रह हैं। रमाशंकर का बाल विज्ञान कथा साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान है। विज्ञान के कई आविष्कार हुए हैं। ऐसे रोचक आविष्कारों की रोचक कहानियाँ बच्चे बड़े शौक से पढ़ते हैं। इसी प्रकार अन्तरिक्ष विज्ञान, अन्तर्ग्रहित यात्राओं, दूसरी दुनिया की कल्पना पर आधारित कहानियाँ भी बच्चों को अत्यंत रोमांचित करती हैं।

बालकों की इसी मनोवृत्तियों को देखते हुए रमाशंकर ने बच्चों को लिए ऐसी कहानियाँ लिखी है जिनके माध्यम से उनकी विज्ञान विषयक अनेक जिज्ञासाओं का समाधान होता है। कहानी एक ऐसी विधा है जिसके द्वारा कठिन से कठिन विषय एवं गूढ़ से गूढ़ बात को सरलता से समझाया जा सकता है। रमाशंकर की ये कहानियाँ बच्चों का मनोरंजन और ज्ञानवर्द्धन करती हुई वैज्ञानिक सोच भी प्रदान करती हैं। रमाशंकर जी के पास वैज्ञानिक ज्ञान भी है और वैज्ञानिक दृष्टि भी। इनके साथ ही विज्ञान के प्रति संवेदना का भाव भी है।

'अन्तरिक्ष का स्वप्निल लोक' रमाशंकर का विज्ञान बाल कथा संग्रह है। जिसका प्रकाशन वर्ष 2006 में मीरा पब्लिकेशन इलाहाबाद द्वारा हुआ। स्वयं लेखक के अनुसार यह विज्ञान की कल्पनाओं की उड़ान का एक प्रयास है बच्चे इनमें डूबकर आनंदित और साथ ही विज्ञान का कुछ ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।<sup>7</sup>

जीवन की अच्छी गुणवत्ता के लिए विज्ञान एक अपरिहार्य अंग बन गया है। आज हम विज्ञान को छोड़कर मानव सभ्यता की कल्पना भी नहीं कर सकते इसलिए आज विज्ञान जरूरी हो गया है। बालकों को आरम्भ से ही इसकी जानकारी पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से मिलती रहती है। किंतु यह कार्य अत्यंत बोझिल और नीरस ढंग से होता है किंतु कहानी का माध्यम इसे रोचक बना देता है। लेखक की संवेदना उसे मानवीय बना देती है। अपनी सरस शैली के कारण विषय इतना मोहक हो जाता है कि उसे बालकों के लिए समझना या याद रखना आसान हो जाता है। इन कहानियों की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि इसमें पात्रों को साहसपूर्ण कार्य प्रदर्शित करने का अवसर मिला है। साहस शक्ति का संचार करता है। उसे द्विगुणित कर कठिनाई पर विजय दिलाने में सफल होता है। बाल एवं किशोर पाठक ऐसी कहानियों को रसमग्न होकर पढ़ते हैं। मूल विषय चाहे विज्ञान हो किंतु चरित्र-चित्रण और वातावरण द्वारा लेखक ने जिस साहस एवं वीरता का पात्रों में भाव दिखाया है वह सराहनीय है और अन्य बालकों के लिए प्रेरक भी है।

अतः जिस निष्ठा, लगन से लेखकों ने कहानियों के माध्यम से विज्ञान साहित्य रचा वह अपने आप में सराहनीय होने के साथ-साथ आने वाली पीढ़ी के लिए भी प्रेरणादायक है जो समाज में न केवल विज्ञान के प्रचार-प्रसार में बल्कि सामाजिक परिवर्तनों और भविष्य की तस्वीर को उभारने में भी उपयोगी है।

### संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. त्रिविधा, संपादक—डॉ. मधु पन्त, पृ. क्र. 59
2. भाषा, संपादक — डॉ. शशि भारद्वाज, भारतीय बालसाहित्य विशेषांक मई—जून 2007, पृ. क्र. 82
3. भाषा, संपादक — डॉ. शशि भारद्वाज, भारतीय बालसाहित्य विशेषांक मई—जून 2007, पृ. क्र. 90
4. चमत्कार का रहस्य, संपादक — डॉ. शकुंतला कालरा
5. बालसाहित्य समीक्षा जुलाई 2006, सम्पादक— डॉ. राष्ट्रबंधु, पृ. क्र. 25
6. बालसाहित्य के युग निर्माता जय प्रकाश भारती, सम्पादक — डॉ. शकुंतला कालरा डॉ. रचना कुमार 2007, पृ. क्र. 25
7. अंतरिक्ष का स्वप्निल लोक (बाल विज्ञान कथा संग्रह), संपादक — रमाशंकर—भूमिका से

# Publish Research Article

## International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Book Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

### Associated and Indexed, India

- \* International Scientific Journal Consortium
- \* OPEN J-GATE

### Associated and Indexed, USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts  
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra  
Contact-9595359435  
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com  
Website : www.aygrt.isrj.org